International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

कौशल विकास का गांधी मार्ग एक नूतन विमर्श

विजय कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
मंगला देवी स्मारक डिग्री कालेज, मसिका नैनी, इलाहाबाद।

गांधी का स्किल डेवलपमेंट विदेश की ज़रूरतों को पूरा करने या बाजार की भूख शांत करने का साधन नहीं है। स्किल डेवलपमेंट की उनकी कसौटी यह है कि इससे बाज़ार की ताकत भी टूटनी चाहिए और समाज बाज़ार का मुकाबला करने में सक्षम भी बनना चाहिए।

महात्मा गांधी कारखाने को समाज की सम्पत्ति मानते थे और श्रमिक तथा उद्योगपतियों को उनका ट्रस्टी, जो उद्योग को समाज या राष्ट्र के हित में चलाते है। उनका कहना था कि हमें अपने किसी भी साधन अथवा अपने समय के एक क्षण का अपव्यय करने का अधिकार नहीं है। यह किसी भी व्यक्ति या समूह का नहीं, वरन राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है और हममें से प्रत्येक उसे सदुपयोग के लिये नियुक्त एक ट्रस्टी है। श्रमिकों और उद्योगपतियों का वे यह अधिकार मानते थे कि किसी कारणवश उत्पादन पर लगने वाली लागत बचायें। उनका यह कर्तव्य है कि वे कारखाने को अच्छी तरह चलाने के लिये एक दूसरे को नुकसान या तकलीफ न पहुंचाये, हमेशा ईमानदारी से कोशिश करते रहें

यह दौर था जब बैरिस्टर गांधी अपना चोला उतारने और महात्मा गांधी का नया चोला पहनने की तैयारी में थे। अहिंसा का शास्त्र बन रहा था। तो लड़ाई से पहले उन्होंने प्रतिपक्षी को बताना जरूरी समझा, तो सरकार को पत्र लिखने बैठे। अपना पक्ष, अपनी मांग और अपना अगला कदम सरकार को बताना उन्हें जरूरी लगा। प्रतिपक्षी के साथ व्यवाहर की यह नई ही रीत थी लेकिन सरकार ने गांधी को उन्हीं के हथियार से मारने की कोशिश की। उसने गांधी की अगली योजना समझ ली तो एक चाल चली ताकि गांधी के भावी आंदोलन की हवा निकल जाये उसने अपने अध्यादेश में एक छोटा–सा परिवर्तन किया– औरतों को रजिस्ट्रेशन

न करवाने की छूट दे दी। बाकी सारी बातें ज्यों–की–त्यों रहीं लेकिन औरतों को आंदोलन से अलग ले जाने की चाल चली गई। उन्हें लगा था कि गांधी इससे बौखला जायेंगे लेकिन गांधी ने इसे दूसरी तरह से ही लिया। उन्होंने कहाः इससे पता चलता है कि सरकार हमारी बात सुन रही है। तो फिर हमें अधिकारियों तक अपनी बात पहुचाने का कोई भी मौका छोड़ना नहीं चाहिए– मुझे ऐसा भी लगता है कि दक्षिण अफ्रीका का हिस्सा होते हुए भी चूंकि ट्रांसवाल एक ऐसा उपनिवेश है कि जिसे सीधे इंग्लैंड से निर्देशित किया जाता है, तो जरूरत के मुताबिक हमें इंग्लैंड जा कर भी अपनी बात कहने की तैयारी रखनी चाहिए।

ऐसी स्थिति जल्दी ही आ गई कि इंग्लैंड जा कर अपनी बात सुनाना जरूरी हो गया। निश्चय किया गया कि भारतीयों का एक प्रतिनिधि मंडल इंग्लैंड जाये और अपनी दिक्कतें ब्रिटिश शासन व समाज को बताये और सबने यह भी माना कि यह काम गांधी से बेहतर कोई नहीं कर सकता। टिकट आदि की व्यवस्था की गई और 03 अक्टूबर, 1906 को बैरिस्टर गांधी और एच.ओ.अली इंग्लैंड के लिये रवाना हुए।

इंग्लैंड में गांधी जहां भी जिससे मिले, सबसे एक ही बात कहते–पूंछते समझाते रहे कि अगर ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में रहने वाला हर नागरिक समान है, उसके अधिकार समान हैं तो फिर आप दक्षिण अफ्रीका में ऐसा भेद–भाव व इतनी अपमानजनक स्थितियां कैसे चलने दे सकते हैं? अंग्रेजों के लिये यह सीधा सवाल बड़ी मुसीबत का कारण बन गया था– क्योंकि ऐसा सवाल, इस तरह आंखों–में–आंखे डाल कर कभी किसी ने पूछा नहीं था और अपनी कथनी और करनी के बीच की इस बेईमानी को शब्दों से कैसे ढका जाए, वे समझ नहीं पा रहे थे। भारतीय मामलों के सचिव मोर्ले ने गांधी को बताया कि वे उनकी हर बात से सहमत हैं और दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों से उनकी पूरी सहानुभूति है। 'तब फिर आप कुछ करते क्यों नहीं'– गांधी का सवाल सीधा था लेकिन मुश्किल सवालों के जवाब इतने सीधे कहां होते हैं।

ऐसा ही हर बार हुआ– तब भी हुआ जब गांधी भारतीयों का प्रतिनिधि मंडल ले कर प्रधानमंत्री सर हेनरी कैंपबेल से मिले तब भी हुआ जब विलियम वेडरबर्न के प्रयासों से, हाअस ऑफ

कॉमन्स के हॉल में वे सारे सौ सदस्य गांधी को सुनने के लिये जमा हुए जो भारतीय मामलों की सबसे अहम समिति के सदस्य हुआ करते थे। सुना तो सबने लेकिन जवाब किसी के पास नहीं था।

गांधी के पास गुण या कुशलता की बहुत पूछ थी क्योंकि वे जानते थे कि हिदुस्तान की सदियों पुरानी गुलामी की जड़ें केवल आर्थिक–राजनैतिक ही नहीं हैं बल्कि यह गहरी मानसिक गुलामी से बदल चुकी है। इससे लड़ने के लिये उन्हें आजाद ख्याल के बहुविध कुशल लोगों की जरूरत थी। गांधी जानते थे कि मनुष्य ईश्वरजन्य होता है लेकिन कुशलता मनुष्यजन्य होती है, ईश्वरीय नहीं। खुद को सुधारना, अपने काम को बेहतर–से–बेहतर बनाना, अपने काम को अधिकाधिक क्षमता से करना यह सब गांधी के स्किल डेवलपमेंट का अनिवार्य हिस्सा था। वे मानते थे कि स्किल या गुणवत्ता बढ़ाने के पीछे अगर निजी कमाई बढ़ाना ही एकमात्र ध्येय होगा तो वह शोषण और शोषक ही पैदा करेगा। स्किल लेडवलपमेंट से आमदनी बढ़े तो गांधी को कोई हर्ज नहीं है, निजी आमदनी बढ़ाने के लिय स्किल डेवलपमेंट किया जाये तो वे उसके खतरों को पहचानते थे। गांधी का स्किल डेवलपमेंट विदेश की जरूरतों को पूरा करने या बाजार की भूख शांत करने का साधन नहीं है। स्किल डेवलपमेंट की उनकी कसौटी यह है कि इससे बाजार की ताकत भी टूटनी चाहिए और समाज बाज़ार की मुकाबला करने में सक्षम भी बनाना चाहिए।

उनका नजरिया हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं कि वे अपने चरखे की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये कारीगरों को आमंत्रित ही नहीं करते हैं बल्कि सबसे अच्छे आविष्कार के लिये इनाम की तजबीज भी करते हैं। लेकिन चरखे की गुणवत्ता में जितनी भी और जैसी भी वृद्धि हो, वे अपनी इस शर्त में कोई ढील देने को तैयार नहीं होते हैं कि चरखा मनुष्य के निजी उत्पादन का साधन नही बना रहना चाहिए, उसकी संरचना ऐसी ही रहनी चाहिए कि जिसे कातने वाला खुद ही ठीक कर सके या ज्यादा–से–ज्यादा गांव के कुशल कारीगर जिसे ठीक कर लें उसका उत्पादन बाजार की मांग को पूरा करने के लिये नहीं, व्यक्ति की निजी जरूरतों को पूरा करने के लिय हो और उसका उत्पादन–खर्च एक निश्चित सीमा के भीतर ही हो ताकि

उनकी कीमत और उसका मुनाफा अमर्यादित न हो जाये। इसलिए खादी का कॉस्टचार्ट भी उन्होंने खुद ही तैयार किया था और व्यवस्था–खर्च की सीमा भी तय कर दी थी। वह सब भूल जाने के कारण ही आज खादी संकट में घिरी है।

राष्ट्रीय हितों का तकाजा है कि श्रमशक्ति राजनीति से अलग रहे। परन्तु हमारे देश में स्थिति पूरी तरह राजनीति से बंध गयी है। हालत यह है कि श्रमशक्ति राजनैतिक दलों से बंधकर ऐसे चक्रव्यूह में फंस गई है। जहां से उसका निकलना संभव नहीं हो पा रहा है। पिछले 38 वर्षों में श्रमशक्ति के विकास पर दृष्टि डाली जाये तो पता लगता है कि श्रम–संघ यद्यपि जुझारू बने हैं परन्तु श्रमशक्ति का विकास कुठित हो गया है। एक समय था, जब गांधी जी ने श्रम संबंधों, जिसे आजकल औद्योगिक सम्बन्धों के नाम से जाना जाता है अपने सत्य–अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रयोग कर एक नया प्रतिमान स्थापित किया था

गांधी के जीवन का यह छोटा–सा प्रसंग हमें बतलाता है कि गुण विकास और कुशलता का अहिंसक प्रयोग में और अहिंसक संरचना में अप्रतिम महत्व है और गांधी उसके साधक भी हैं और शिक्षक भी! और अंत में मैं यह भी बताता चलूं कि जब इंग्लैंड का अपना काम पूरा कर, गांधी दक्षिण अफ्रीका लौटने को हुए तो कुशल साथियों की अपनी इस टीम को उन्होंने बाजाप्ता पार्टी दी और साथ का आनंद ले कर विदा हुए। काम मशीनी नहीं होगा और स्किल डेवलपमेंट मानवीय होगा तो उससे व्यक्ति के निजी जीवन में और उसके सामाजिक सरोकारों में आनंद, खुशी और सार्थकता बढ़ेगी और यही तो जीवन है। आज औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र में जो कड़वाहट है उसका मुख्य कारण यह है कि हम गांधीजी के बनाये सिद्धान्तों से दूर हो रहे हैं। यह प्रवृत्ति राष्ट्रीयकृत बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों में तेजी से बढ़ी है। अब तो तीन हजार से ऊपर वेतन पाने वाले बैंक अधिकारी, तक हडताल पर उतरने लगे हैं। कुल मिलाकर यह स्थिति राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिये शुभ नहीं है। यह प्रगति नहीं, मतिभ्रम का द्योतक है। मतिभ्रम की इस स्थिति में यदि हम गांधीजी का अध्ययन कए श्रमिक नेता के रूप में करें तो बहुत कुछ सीख सकेंगे।

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

References

Gandhi, Mohandas Karamchand; Tolstoy, Leo (September 1987). B. Srinivasa Murthy, ed. *Mahatma Gandhi and Leo Tolstoy letters*. Long Beach Publications.

Ramachndra Guha (2004). *Anthropologist Among the Marxists: And Other Essays*. Orient Blackswan. pp. 81–6.

Gonsalves, Peter (2012). *Khadi: Gandhi's Mega Symbol of Subversion*. SAGE Publications.

Schroyer, Trent (2009). Beyond Western Economics: Remembering Other Economic Culture. Routledge.

Richard H. Davis (2014). The "Bhagavad Gita": A Biography. Princeton University Press. pp. 137–145

Simone Panter-Brick (2015). Gandhi and Nationalism: The Path to Indian Independence. I.B.Tauris. pp. 75–77.

William Borman (1986). Gandhi and Non-Violence. State University of New York Press. pp. 26–34

"To boost Skill India Mission, Govt sets aside Rs 17,000 crore in Budget". The Economic Times. Retrieved 2017-02-05.

एम.टी. (2011): एमबीए टेलेंट पूल रिपोर्ट की फाइण्डिंग्स, बैंगलोर, मेरिटट्रेक पब्लिकेशन्स

यूनेस्को (2005): सैकण्डरी एज्यूकेशन रिफार्मः टूवर्डस ए कन्वर्जेंस ऑफ नॉलेज एक्वीजिशन एण्ड स्किल डवलपमेंट

मेक्लीन, रूपर्ट, जगन्नाथन, भाान्ति एवं सार्वी, जूको (2013), स्किल्स डवलपमेंट फॉर इनक्लूसिव एण्ड सस्टेनेबल ग्रोथ इन डवलपिंग एशिया पेसिफिक, स्प्रिंगर